ब्रह्म और ब्रह्मज्ञानी की महिमा

श्री संदीप, फाजिल्का

कई बार दुनियां बनी और बन कर मिट गई। कई पैगम्बर अवतार हुए लेकिन आज तक किसी भी पैगम्बर या अवतार ने ब्रह्म और ब्रह्म ज्ञान के बारे में नहीं बताया। सब ने यह तो कहा कि ब्रह्म एक है लेकिन वह कौन है उस का नाम क्या है, स्वरूप क्या है, लीला क्या है। इसके बारे में किसी ने कुछ नहीं बताया। कइयों ने खोजने की कोशिश भी की। परन्तु सब असफल रहे

दौड़े कई पैगम्बर
कई तिर्थंकर अवतार
अव्वल से आखिर लग,
किन खोल्या न बका द्वार ॥
छोटे बड़े जिन खोजिया,
न पाया करतार।
संसय सब कोई ले चलता,
छूटा नहीं विकार ॥
जैसे बालक बावंरा,
खेले हँसता रोय।
ऐसे साधू शास्त्र में,
दृढ़ न शब्दा कोय ॥

ब्रह्मा विष्णु महेश सबने एक ब्रह्म कहा पर उस एक का ज्ञान किसी को नहीं मिला। जिस के लिए राम भगवान ने कहा कि 'मैं तो पार ब्रह्म का नाम भी नहीं जानता'।

नेति-नेति कहे वेद निरूपा,
निजानन्द निरुपाधि अनूपा।
शम्भु विरंचि विष्णु भगवाना,
जाके अंश के उपजे नाना ॥

गुरु नानक देवजी ने कहा, "नानक एको सुमरिये" लेकिन गुरु नानक देव जी खुद उस एक ब्रह्म की खोज नहीं कर सके। इसलिए उन्होंने कहा 'कोई आन मिलावे मैंनू मेरा प्रीतम प्यारा, तायों जिन्द बिकाऊँ"।

अर्थात जितने भी पीर, पैगम्बर अवतार हुए किसी ने भी ब्रह्म को नहीं जाना तो उसके ज्ञान को क्या जानते। उस एक ब्रह्म को त्रिलोकी ब्रह्मा, विष्णु, महेश नहीं जान सके 'तो बेचारे माया के जीव ब्रह्म और ब्रह्म-ज्ञान के बारे में क्या जानते।

वह एक पूर्ण ब्रह्म अपनी अंगनाओं की खातिर खुद इस दुनियां में आए और अपने (ब्रह्म) बारे में ओर अपने ज्ञान (ब्रह्मज्ञान) के बारे में आकर बताया। ब्रह्म के बारे में सब ग्रन्थों में उनकी महिमा लिखी है, लेकिन ब्रह्म-ज्ञानी (अंगनाएं) के बारे में गुरु नानक देव जी ने उन्हें ब्रह्म के समान कहा है।

ब्रह्म मुनि है ब्रह्म समाना।

अर्थात ब्रह्म ज्ञान (अंगनाएं) जानने वाला खुद ब्रह्म है। उन्होंने ब्रह्मज्ञानी के बारे में ग्रन्थ साहिब में लिखा है।

मन सांचा सुख सांचा सोई,
और न पेखे (याद) एक बिन कोई,
नानक ऐह लक्षण ब्रह्मज्ञानी होई।

ब्रह्मज्ञानी सदा निरलेप जैसे जल में कमल अलेप जैसे कांटों में गुलाब खिलते हैं वैसे ही

Nijanand App

इस दुख स्वरुप माया में ब्रह्मज्ञानी (अंगनायें) खुश रहते है।

ब्रह्मज्ञानी की दृष्टि समान।
जैसे राजा रंक कऊ लागे तुलि पकवान।

ब्रह्म ज्ञानी के मित्र सत् समान।
ब्रह्म ज्ञानी के नाहीं अभिमान॥
ब्रह्म ज्ञानी ऊँच ते ऊँचा,
मन अपने है सब ते नीचा॥
ब्रहम ज्ञानी सदा समदर्शी,
ब्रह्म ज्ञानी की दृष्टि अमृत बरसी॥
ब्रह्म ज्ञानी बन्धन ते मुक्ता,
ब्रह्म ज्ञानी की निर्मल जुगता॥
ब्रह्म ज्ञानी का भोजन ज्ञान,
नानक ब्रह्म ज्ञानी का ब्रह्म ध्यान॥

अर्थात ब्रह्म, ब्रह्म ज्ञानी को खुद याद करता है।

ब्रह्म ज्ञानी एक ऊपरी आस,
ब्रह्म ज्ञानी का नाहीं विनास॥
ब्रह्म ज्ञानी के ऐके रंग,
ब्रह्म ज्ञानी के बसे प्रभू संग॥
ब्रह्म ज्ञानी के मन परमानन्द,
ब्रह्म ज्ञानी के घर सदा आनन्द॥

ब्रह्म ज्ञानी का दरश (दर्शन) बड़भागी पाइये।
ब्रह्म ज्ञानी कऊ (पर) बली-बली जाइये।

ब्रह्म ज्ञानी कऊ (को) खोज ही महेश्वर
नानक ब्रह्म ज्ञानी आप परमेश्वर॥

ब्रह्म ज्ञानी को कौन जाने भेद,
ब्रह्म ज्ञानी सरब (सब) का ठाकुर॥
ब्रह्म ज्ञानी की भक्ति कौन बखाने,
ब्रह्म ज्ञानी की गति ब्रह्म ज्ञानी जाने॥

ब्रह्म ज्ञानी का अन्त न पार,
नानक ब्रह्मज्ञानी कऊ (को) सदा नमस्कार
ब्रह्म ज्ञानी सब सृष्टि का करता,
ब्रह्म ज्ञानी सदा जीवे नहीं मरता॥
ब्रह्म ज्ञानी मुक्ति जुगती जीऊ का दाता,
ब्रह्म ज्ञानी पूर्ण पुरुख विधाता॥
ब्रह्म ज्ञानी अनाथ का नाथ,
ब्रह्म ज्ञानी का सबके ऊपर हाथ॥
ब्रह्म ज्ञानी की शोभा ब्रह्मज्ञानी बनी
नानक ब्रह्म ज्ञानी सबका धनी॥

गुरु नानक देव जी ने तो ब्रह्म ज्ञानी 'अंगनाएँ' की इतनी महिमा कही है और आज हम सुन्दर साथ एक होकर धनी से प्रार्थना करें और इस माया को छोड़कर निज सुख को याद करें।

लागोगे दुःख को तो,
दुःख तुम को लागसी।
याद करो निज सुख को,
तो दुख तुम से भागसी॥
प्रणाम जी?

Nijanand App